

सुन ओ रेवा, करूँ का सेवा  
 रो-रो तुम्हें पुकारूँ रेवा  
 दूँद रहा हूँ हर तट में  
 तेरा पार न पाया कोई-  
 आप विराजीं घट-घट में  
 सुन ओ रेवा करूँ का सेवा-----

बाल रूप देखा है तेरा  
 अमरकंठ में जो आकर  
 मन पंद्ही बन उड़ा गगन में  
 धन्य हुआ दर्शन पाकर  
 तजूँ प्राण मैं हँसते-हँसते ३३३३३३  
 आकर तेरी चौखट में  
 तेरा पारन-----

झिलमिल-झिलमिल लहरें तेरी  
 शशि किरणों में लहराई  
 नाप नहीं पाया कोई रेखा  
 अंतरमन की बाहराई  
 इतना प्यार दिया है तूने ३३३३३  
 सार नहीं कोई जमघट में  
 तेरा पारन-----

याद करूँ मैं हरदम तेरी  
 हर दम तुम्हें पुकारूँगा  
 दास "श्रीबाबा श्री" नीर भर लाये  
 आठों पहर निहारूँगा  
 अब तो रेखा आन निहारो ३३३३३  
 नाम है तेरा नटखट में  
 तेरा पारन-----